शरत्चन्द्र

मंझली दीदी

सुबोध बाल पॉकेट सीरीज २५

मँझली दीदी

लेखक

शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय

सुबोध बाल पॉकेट बुक्स, दिल्ली-६

प्रकाशक	सुबोध पॉकेट बुक्स, २, दरियागंज, दिल्ली-६
संस्करण	जून, १९७५
मुद्रक	अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

मूल्य : १.००

□□

किशन की माँ जैसे-तैसे रूखा-सूखा जुटाकर उसे पालती-पोसती रही। जब वह मरी तो किशन चौदह वर्ष का था। घर में कुछ भी नहीं था। गाँव में भी उसे आश्रय देनेवाला कोई नहीं था।

उसकी सौतेली बहन कादम्बिनी की अवस्था अच्छी थी। इसलिए गाँव के सभी लोगों ने किशन को वहीं जाकर रहने की सलाह दी। बोले, "अरे किशन! तुम अपनी बड़ी बहन के घर जाकर रहो। वे खाते-पीते लोग हैं। वहाँ तुम्हारा गुजारा हो जाएगा।"

माँ के वियोग में रो-रोकर किशन बीमार पड़ गया था। ठीक होने पर उसने भीख माँगकर माँ का श्राद्ध किया।

गाँव का एक बूढ़ा नाई किशन की माँ को बहुत मानता था। वही किशन को उसकी बहन के घर पहुँचाने साथ चला।

किशन का सिर मुँडा हुआ था। वह अपनी एकाध चीज की पोटली को सिर पर रखकर नाई के साथ अपनी बहन के घर राजघाट आ पहुँचा। बहन उसे पहचानती तक नहीं थी। उस बूढ़े नाई से उसका परिचय पाकर और यहाँ आने का उद्देश्य जानकर वह एकदम बिगड़ उठी। उसे लगा कि यह सौतेला भाई उसकी सुखी-शान्त गृहस्थी को बिगाड़ने के लिए आ पहुँचा है।

उसने बूढ़े नाई को इस बात के लिए खूब फटकारा कि क्यों वह उसे यहाँ का रास्ता दिखाने चला आया। वह बोली, "मुफ्तखोरों को खिलाने के लिए मेरे पास रोटियाँ नहीं हैं।" फिर उसने अपनी सौतेली माँ को लक्ष्य कर कहा, "चुड़ैल,

जब तक जीती रही, एक बार भी मेरा ध्यान नहीं आया। तब मैं उसकी कुछ नहीं लगती थी। अब मर गई तो इस बला को मेरे सिर मढ़ दिया। मैं तुम्हें नहीं रख सकती। मेरा घर अनाथालय नहीं है। यह सब झंझट मुझे नहीं चाहिए।"

बड़े भाई ने भी जमाना देख रखा था। वह ऐसी कड़वी-तीखी बातें सुनकर भी टस-से-मस नहीं हुआ। उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "बहन! तुम्हारा घर अन्न-धन से भरा-पुरा है। न जाने कितने नौकर-चाकर, अतिथि और अभ्यागत, कुत्ते-बिल्ले और कौवे तुम्हारे अन्न से पलते हैं। फिर यह लड़का तो तुम्हारा भाई ही है। यह भी मुट्ठी-भर भात खाकर घर के किसी कोने में पड़ा रहेगा। जहाँ इतना पकता है, वहाँ एक आदमी का भोजन तो यों ही निकल आता है। फिर यह लड़का एकदम शान्त स्वभाव का और बहुत समझदार है। इसे भाई समझकर न भी रखो तो एक दुखी और अनाथ ब्राह्मण बालक समझकर ही अपने घर में शरण दे दो। भगवान् तुम्हारा

भला करेगा।"

ऐसी चिकनी-चुपड़ी बातों से तो पुलिस के दरोगा का मन भी पसीज जाता, कादम्बिनी तो एक नारी थी। वह चुप रही और बूढ़े ने समझ लिया कि मौन उसकी स्वीकृति का लक्षण है। वह किशन को एक ओर ले गया और दो-एक बातें समझाकर, अपनी आंखों में छलछलाते आंसुओं को पोंछता हुआ अपने गांव लौट चला।

किशन को आश्रय मिल गया।

□

कादम्बिनी के पति नवीनचन्द्र मुखोपाध्याय की धान और चावलों की आढ़त थी। जब वह दोपहर को भोजन करने घर आए तो उन्होंने किशन को तिरछी आंखों से देखते हुए पूछा, "यह कौन है?"

कादम्बिनी ने मुँह बिचकाकर उत्तर दिया, "तुम्हारा सगा सम्बन्धी—साला। घर में आश्रय दो तो इनके लिए भोजन-वस्त्र जुटाओ, और न दो तो दुनिया-भर की बातें सुनो। इधर कुआँ उधर खाई।"

नवीनचन्द्र को सास की मृत्यु का समाचार मिल ही चुका था। साले के यहाँ आने का कारण समझते उन्हें देर नहीं लगी। किशन को नजर-भर देखकर बोले, "ठीक है। खूब सुडौल सुन्दर शरीर है।"

कादम्बिनी पटाक से बोली, "सुडौल क्यों नहीं होगा? पिता जितनी धन-सम्पत्ति छोड़ गए थे, कमबख्तों ने इसी के पेट में तो ठूँस दी है। मुझे तो एक कानी कौड़ी न दी।"

कादम्बिनी अच्छी तरह जानती थी कि पिता के पास सम्पत्ति के नाम पर एक कच्ची झोंपड़ी और नीबू का एक पेड़-मात्र था। उसी टूटी-फूटी झोंपड़ी में बेचारी बुढ़िया किसी तरह अपना सिर

छिपाकर रखती थी और नीबू बेचकर लड़के की स्कूल की फीस जुटाती थी।

नवीन ने एक आदमी का खर्च बढ़ जाने के क्रोध को दबाते हुए कहा, "चलो, सब ठीक है!"

"ठीक तो है ही। तुम्हारा साला जो ठहरा! जैसे-तैसे अपना और अपने बच्चों का पेट काटकर इसका पेट भरना पड़ेगा, नहीं तो गाँव-भर में और सारे सम्बन्धियों में निन्दा जो होगी।" यह कहते हुए कादम्बिनी ने आँगन के पार वाले मकान की दूसरी मंजिल की एक खुली खिड़की की ओर तकते हुए आँखों से खूब आग बरसायी। वह मकान उसकी मँझली देवरानी हेमांगिनी का था।

उधर बेचारा किशन बरामदे के एक कोने में सिर नीचा किए हुए, मारे लज्जा के गड़ा जा रहा था। उसकी आँखों से टप-टप आँसू बह रहे थे।

कादम्बिनी ने उसे फटकारते हुए कहा, "ये झूठमूठ के आँसू बहाना बन्द कर। जा, ताल में जाकर नहा-धो ले।"

इसके बाद उसने अपने पति को सम्बोधित करते हुए कहा, "तुम नहाने जाओ तो इस बाबू साहब को भी साथ लेते जाना। ये कहीं ताल में डूब-ऊब गए तो घर-भर के लोगों को हथकड़ी लग जाएगी।"

□

किशन एक तो वैसे ही कुछ अधिक खाता था, दूसरे कल दोपहर के बाद उसने कुछ खाया-पिया नहीं था, उसे काफी लम्बा रास्ता चलना पड़ा था और अब दिन ढलने को हो गया था। उसने थाली का सारा भात खा लिया, पर उसकी भूख नहीं मिटी। नवीनचन्द्र पास ही बैठे भोजन कर

रहे थे। किशन की थाली खाली देखकर उन्होंने पत्नी से कहा, "किशन को भात दो।"

"देती हूँ।" कादम्बिनी ने तुनककर कहा और भात से भरी हुई थाली किशन की थाली में पलट दी।

किशन जब फिर भात खाने लगा तो जोर से हँसती हुई बोली, "यह अच्छी रही। इस हाथी के लिए भोजन जुटाने में तो जल्दी ही दीवाला निकल जाएगा।"

मारे लज्जा और ग्लानि के किशन का चेहरा और भी झुक गया। भात उसके गले में खटकने लगा। वह अपनी माँ का इकलौता पुत्र था। माँ उसके लिए संभवतः कभी भी बढ़िया चावल का भात नहीं जुटा पाई होगी, पर भरपेट भात खाने के अपराध में उसे कभी भी लज्जा से सिर नीचा नहीं करना पड़ा था। इसके विपरीत माँ तो सदा यही कहा करती थी कि 'बेटा, तुमने खाया ही क्या, थोड़ा-सा तो और ले ले।' एक बार जब भात खाते समय उसने माँ से पतंग और डोर

खरीदने के लिए पैसे माँगे थे, माँ ने उसे कहा था कि 'दो बाल्टी भात और खा लेगा, तभी पतंग-डोर के लिए पैसे दूँगी।'

उसकी आँखों से आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें ढुलककर थाली में गिरने लगीं, पर उसे हिम्मत नहीं पड़ी कि अपनी आँखें पोंछ ले। वह डर रहा था कि कहीं बहन ने देख लिया तो उसे झिड़की खानी पड़ेगी।

□

नवीनचन्द्र के दो छोटे भाई थे। सबसे छोटे की मृत्यु हो चुकी थी। बीच वाला—विपिनचन्द्र भी धान-चावल की आढ़त का ही कारोबार करता था। दोनों भाइयों ने पिता की सम्पत्ति का बँटवारा कर लिया था। नवीनचन्द्र का कारोबार विपिनचन्द्र की अपेक्षा कुछ अधिक था।

विपिनचन्द्र की पत्नी हेमांगिनी शहर से आई है। उनका मकान दुमंजिला है। वह ठाट-बाट से रहना पसन्द करती है। घर में नौकर-नौकरानी सभी हैं। वह स्वभाव की भी उदार है। देवरानी और जेठानी के स्वभाव में जमीन-आसमान का अन्तर होने से कोई चार वर्ष पहले दोनों लड़-झगड़कर अलग-अलग हो गई थीं। तब से अब तक दोनों में मनमुटाव का सिलसिला चालू रहा है। झगड़ा होता है और कुछ दिन बाद सुलह भी हो जाती है।

कादम्बिनी अपने मन की गुत्थी कभी नहीं खोलती। हेमांगिनी में यह बात नहीं है। वह मन में कुछ नहीं रखती। यद्यपि यह सच है कि मुँह-फट हेमांगिनी ही पहले झगड़ती है, किन्तु क्रोध शान्त होने पर झगड़ा मिटाने के लिए, हाथ-पैर जोड़कर, अनुनय-विनय करके, क्षमा माँगकर जेठानी को अपने घर पकड़कर ले आती है, फिर दोनों में बोलचाल प्रारम्भ हो जाती है।

आज दिन-ढले हेमांगिनी अपनी जेठानी के पास आ पहुँची। कुएं के पास ही पक्के चबूतरे पर धूप में बैठा किशन कपड़ों में साबुन लगा रहा था। कादम्बिनी पास खड़ी थोड़े साबुन से, शरीर का अधिक बल लगाकर कपड़े धोने की कला किशन को सिखा रही थी। यह मँझली देवरानी को देखते ही बोल पड़ी, "हे भगवान्! यह लड़का कितने मैले-कुचैले कपड़े पहनकर आया है!"

बात ठीक ही थी। ऐसे कपड़े पहनकर कौन अपने सम्बन्धियों के यहाँ जाता है! उन कपड़ों की सफाई आवश्यक थी। पर उससे भी अधिक आवश्यक थी कादम्बिनी के पुत्र पाचू गोपाल और पति नवीनचन्द्र के कपड़ों की सफाई। उन्हीं के कपड़ों का ढेर किशन को साफ करना था। अपने तो उसके पास केवल दो-तीन ही कपड़े थे। हेमांगिनी देखते ही समझ गई कि कपड़े किसके हैं। वह इस बात को टाल गई और बोली, "जीजी, यह लड़का कौन है?" पता उसे सब

था कि जेठानी का सौतेला भाई है। वह तो जेठानी से कहलवाना चाहती थी। पर जब जेठानी को उसने बात टालते देखा तो बोला, "लड़का तो बहुत सुन्दर है। इसका चेहरा एक-दम तुम्हारी ही तरह है, जीजी! क्या यह तुम्हारे मायके का कोई सम्बन्धी है?"

अब तो कादम्बिनी को सच-सच बताना ही पड़ा। बोली, "हाँ, यह मेरा सौतेला भाई है! अरे ओ किशना! अपनी मँझली दीदी को प्रणाम तो कर! राम-राम, कैसा गँवार है! बड़ों को प्रणाम करना होता है, यह भी क्या तेरी अभागी माँ तुझे सिखलाकर नहीं मरी?"

किशन बेचारा सकपकाकर उठ खड़ा हुआ। कादम्बिनी के पास आकर प्रणाम करना ही चाहता था कि उसने झिड़ककर कहा, "अरे मर-जाने! तू क्या बहरा है? किसे प्रणाम करने को कहा और किसे करने लगा।"

आज जिस घड़ी से किशन इस घर में आया है, तभी से तिरस्कार और अपमान के थपेड़ों से

उसका दिमाग भिन्ना गया है। बहन की फटकार खाकर ज्योंही उसने हेमांगिनी के पैरों पर सिर झुकाया, त्योंही हेमांगिनी ने उसे हाथ पकड़कर उठा लिया और उसकी ठुड्डी छूकर आशीर्वाद देते हुए कहा, "बस-बस। रहने दो, भैया! जुग-जुग जियो।"

किशन बेचारा मूढ़ की तरह उसके मुँह की ओर ताकता रहा। उसे आश्चर्य हो रहा था कि इस जगह ऐसे मीठे बोल भी कोई बोलता है!

किशन का ग्लानि से लटका हुआ और भय-भीत चेहरा देखकर हेमांगिनी का मातृ-हृदय पसीज उठा। उसे रुलाई आने को हुई। निरीह किशन को अपनी ओर खींचकर उसने छाती के साथ लगा लिया। रास्ते की थकान, अपमान के घूँट और अब धूप में कपड़े धोने से उसका चेहरा तमतमाया हुआ था। माथे पर पसीने की बूँदें उभरी हुई थीं। हेमांगिनी ने अपने आंचल से उसका पसीना पोंछते हुए जेठानी से कहा, "जीजी,

इस बेचारे से कपड़े क्यों धुलवा रही हो ? किसी नौकर को कह देती ?"

कादम्बिनी इन प्रश्नों का कोई उत्तर न दे सकी। वह अपने व्यवहार पर कुछ लज्जा अनुभव करने लगी। फिर कुछ सँभलकर झेंप मिटाने के लिए बोली, "मँझली बहू, मैं तुम्हारी तरह अमीर नहीं हूँ जो नौकर रख सकूँ।"

जेठानी की बात सुनकर हेमांगिनी ने अपनी बेटी को पुकारा और कहा, "उमा, शिबू को यहाँ भेज दे। जेठानी और पांचू के कपड़े धो जाएगा।" फिर उसने जेठानी की ओर मुड़कर कहा, "आज शाम को किशन और पांचू दोनों हमारे यहाँ भोजन करेंगे। पांचू ज्योंही पाठशाला से आए, उधर भेज देना। किशन को मैं अपने साथ लिये जाती हूँ।" फिर किशन से बोली, "किशन, इनकी तरह मैं भी तुम्हारी दीदी हूँ। आओ, मेरे साथ चलो।"

किशन स्वीकृति के लिए कादम्बिनी की ओर

देख ही रहा था, किन्तु हेमांगिनी उसका हाथ पकड़कर ले चली।

कादम्बिनी ने कुछ नहीं कहा। वह प्रसन्न थी कि आज दो जनों का भोजन तो बना। कादम्बिनी के लिए इस दुनिया में पैसे से बढ़कर कुछ नहीं था। हेमांगिनी ने जो ताने उसे दिए थे, उन्हें भी वह अनसुना कर गई।

□

शाम का भोजन हेमांगिनी के घर खाकर जब किशन लौट आया तो कादम्बिनी ने पूछा, "क्यों रे किशन! खाने को क्या बना हुआ था वहाँ?"

किशन ने डरते-डरते कहा जैसे वह कोई अपराध कर आया हो, "पूरी।"

"तरकारी क्या थी?"

किशन ने फिर उसी तरह सहमकर उत्तर दिया, "रोहू मछली के सिर की तरकारी, सन्देश और रसगुल्ला।"

"अरे, मैं पूछती हूँ कि मँझली बहू ने रोहू का सिर किसकी थाली में परोसा था?"

यह प्रश्न सुनकर किशन का चेहरा पीला पड़ गया। कसाई के सामने बकरे की जो हालत होती है, वैसी ही हालत किशन की हो गई। इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए उसकी जीभ काम नहीं कर रही थी।

कादम्बिनी ने उसकी कठिनाई को समझते हुए कहा, "तुम्हारी ही थाली में परोसा था न?"

बहुत बड़े अपराधी की तरह सहमे हुए किशन ने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

कादम्बिनी के पति नवीनचन्द्र बरामदे में बैठे तम्बाकू पी रहे थे। उन्हें सम्बोधित करते हुए कादम्बिनी ने कहा, "सुन रहे हो न?"

नवीनचन्द्र ने 'हूँ' कहा और फिर तम्बाकू पीने लगे। पर कादम्बिनी को चैन कहाँ! वह

बोली, "इस सगी चाची का व्यवहार तो देखो। वह खूब जानती है कि मेरे पाचू को मछली का सिर बहुत भाता है। फिर भी उसने रोहू का सिर उसकी थाली में न परोसकर इस गँवार को खिला दिया। बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद!" फिर किशन को सम्बोधित करके बोली, "क्यों रे, सन्देश और रसगुल्ला तो खूब पेट भर-कर खाया न? आज तक कभी ऐसे व्यंजन खाए थे क्या?" फिर नवीनचन्द्र से बोली, "इस किशन के लिए तो मोटे चावल का भात ही बड़ी चीज है। इसे पूरी-सन्देश और रसगुल्ला खिलाने से क्या लाभ!"

दूसरे ही दिन कादम्बिनी ने अपने एक नौकर को हटा दिया। अब किशन उसकी जगह आकुल की दुकान पर काम करने लगा। वह सौदा तोलने, धान-चावल के नमूने इकट्ठे करने तथा नवीनचन्द्र की अनुपस्थिति में दुकान सँभालने लगा।

□

किशन तालाब में स्नान करके लौटा तो कादम्बिनी सो रही थी। मारे भूख के किशन का बुरा हाल था। इस समय वह शेर-बाघ के मुँह से भी भोजन छीनने का साहस कर सकता था, पर उसे सोयी बहन को जगाने की हिम्मत नहीं पड़ी। वह रसोईघर के बरामदे में एक कोने में चुपचाप बैठा रहा और बहन के जागने की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ देर बाद उसे किसी ने पुकारा, "किशन!"

उसने सिर उठाकर इधर-उधर देखा। मंझली दीदी अपने मकान की ऊपरवाली मंजिल की खिड़की में से सिर निकालकर पुकार रही थी। वह नीचे उतर आई और किशन के पास आ खड़ी हुई। बोली, "कई दिनों से तो सूरत दिखाई नहीं दी! यहाँ इस तरह गुमसुम क्यों बैठा है?"

भूख से व्याकुल किशन की आँखों में आँसू छलछलाने लगे। उस अनाथ बालक ने हेमांगिनी को कोई उत्तर नहीं दिया।

चाची की आवाज सुनकर कादम्बिनी की छोटी बिटिया बाहर निकल आई और किशन से बोली, "किशन मामा, रसोईघर में तुम्हारे लिए भात ढँका रखा है। जाकर खा लो। माँ खा-पीकर सो गई है।"

हेमांगिनी के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वह विस्मय के साथ बोली, "किशन ने अभी तक खाना नहीं खाया? मैया रे! दिन ढलने को है और किशन अभी तक भूखा है? क्यों रे किशन! आज इतनी देर क्यों हो गई?"

किशन अब भी चुपचाप बैठा रहा। उत्तर दिया दुनिया ने, "किशन मामा को तो रोज ही देर हो जाती है। जब पिताजी खा-पीकर दुकान पर पहुँचते हैं, तभी तो मामा खाना खाने आ पाते हैं।"

अब हेमांगिनी को पता लगा कि किशन दुकान पर काम करने लगा है। हेमांगिनी की आँखों में पानी भर आया। वह अपनी आँखें पोंछती हुई घर गई और दूध से भरा कटोरा लेकर लौट आई; किन्तु रसोई के द्वार पर पहुँची तो सिहर उठी। किशन भात खाने बैठा था। थाली में ठण्डे भात के ढेले पड़े थे। थोड़ी-सी दाल एक ओर पड़ी थी। दूध का कटोरा पाकर किशन के मुँह पर चमक आ गई। वह भात खाकर हाथ धोने बाहर निकला तो हेमांगिनी ने देखा कि उस सूखे भात का एक दाना भी थाली में नहीं बचा था।

हेमांगिनी का बेटा ललित भी किशन की ही उम्र का है। हेमांगिनी ने सोचा, यदि मैं न रहूँ तो क्या मेरे लाल को भी ऐसी ही दुर्दशा होगी? हे भगवान्! किसी बालक के माता-पिता न मरें! उसका मन भर आया, पर किसी तरह मन मारकर वह अपने घर लौट आई।

□

हेमांगिनी को बीच-बीच में सर्दी लगकर बुखार आ जाता और दो-तीन दिन बाद आप ही ठीक भी हो जाता। कुछ दिनों बाद उसे इसी तरह का बुखार हो गया। सांझ होने को थी। वह अपने बिछौने में पड़ी हुई थी। बच्चे बाहर खेल रहे थे। घर में कोई नहीं था। उसे लगा जैसे बाहर किवाड़ की आड़ में खड़ा कोई भीतर झांक रहा है। उसने पुकारा, "किवाड़ के पास कौन खड़ा है रे? ललित?" जब कोई उत्तर नहीं मिला तो उसने दोबारा पुकारा।

इस बार सहमा हुआ स्वर सुनाई दिया, "मैं हूँ।"

"मैं कौन? आ, भीतर चला आ।"

किशन संकोच के साथ कमरे में चला आया और दीवार के साथ सटकर खड़ा हो गया।

हेमांगिनी उठकर बैठ गई और किशन को अपने पास बुलाकर पूछने लगी, "बोल रे, क्या बात है ?"

किशन थोड़ा और हेमांगिनी की ओर खिसका और फिर अपने मैले गमछे के छोर की गाँठ को खोलकर दो अमरूद निकालकर बोला, "इन्हें खा लेना। बुखार ठीक हो जाएगा।"

हेमांगिनी ने हाथ बढ़ाकर वे अमरूद ले लिए और पूछा, "ये तुझे कहाँ मिले ? मैं कल से सबसे कह रही हूँ कि कहीं से मेरे लिए अमरूद ला दो पर किसी ने लाकर नहीं दिए।" यह कहते हुए उसने किशन का हाथ पकड़कर उसे अपने पास बिठा लिया।

संकोच और आनन्द से लाल हो रहा मुखड़ा किशन ने नीचे झुका लिया।

हेमांगिनी ने दूसरा प्रश्न किया, "तुमसे यह किसने कहा कि मैं अमरूद खाना चाहती हूँ ?"

किशन ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसे लगा, मँझली दीदी के रूप में उसकी माता दोबारा उसे मिल गई है।

किशन के घर लौटकर आते ही कादम्बिनी उस पर बरस पड़ी, "क्यों रे किशन! तू दोपहर को दुकान से भागकर कहाँ चला गया था?"

किशन चुप रहा। कादम्बिनी के क्रोध का पारा और भी चढ़ गया। उसने अपने बेटे पाँचू गोपाल को बुलाकर उसके कान मलवा दिए और रात को उसे भूखा रखने का दण्ड भी दिया।

किशन जानता था कि वह आश्रयहीन है, इसलिए सारे अत्याचार चुपचाप सह रहा था। पर आज वह इस अपमान को चुपचाप नहीं पी सका। वह मकान के एक अँधेरे कोने से पड़ा-पड़ा बिलख-बिलखकर रोता रहा।

□

अगले दिन सवेरे ही किशन हेमांगिनी के घर पहुँचकर उसके बिछौने पर पाँवों की ओर आकर बैठ गया। हेमांगिनी ने अपने पैर खींचकर उसके बैठने के लिए जगह कर दी। उसने किशन से पूछा, "क्यों रे किशन! आज दुकान नहीं जाएगा?"

"जाऊँगा।" किशन ने उत्तर दिया।

"देर मत कर देना भैया! नहीं तो वह अभी गालियाँ बकने लगेगी।"

किशन का चेहरा उदास हो गया—"अच्छा जाता हूँ।" कहकर वह उठ खड़ा हुआ पर, फिर रुक गया जैसे जाना न चाहता हो।

हेमांगिनी ने उसके मन के भाव को ताड़ते हुए कहा, "तुम्हें मुझसे कुछ कहना हो तो बताओ।"

किशन ने नीचे की ओर देखते हुए मरी-सी आवाज में कहा, "मँझली दीदी, कल से कुछ खाया नहीं है।"

हेमांगिनी के करुणार्द्र नयन एकदम झर-झर बहने लगे। फिर उसने किशन को अपने पास बिठा लिया और कहा, "तुझे मेरी सौगन्ध है, आज से मुझे अपनी माँ की तरह ही समझना। समझा रे?"

□

कादम्बिनी को भी पता लग गया कि किशन हेमांगिनी को इधर की सारी बातें बता आता है। उसने हेमांगिनी से रोषपूर्वक कहा, "मँझली बहू, तू जो किशन को इस तरह सिखाती और खिलाती रहती है, यह ठीक नहीं है। तू क्या समझती है कि हम उसे भूखों मारना चाहते हैं? तू कल से उसकी सगी हो गई?"

बात करने के इस ढंग से हेमांगिनी को भी क्रोध आ गया; बोली, "मैंने खिला ही दिया तो इसमें बुरा मानने की क्या बात है ?"

कादम्बिनी बोली, "अगर इस तरह तुम उसे उकसाओगी तो वह हमारी बात क्यों मानेगा ? यदि हम इसी तरह तुम्हारे बेटे को बिगाड़ने की बात करें तो क्या तुम्हें बुरा नहीं लगेगा ?"

अब तो हेमांगिनी से अपने को संयत रखना कठिन हो गया। वह बोली, "मुझे इस घर में आए पन्द्रह-सोलह बरस हो चले। मैं तुम्हें अच्छी तरह पहचानती हूँ। पहले अपने बेटे को भूखा रखकर देखो।"

करारा उत्तर पाकर कादम्बिनी सन्न रह गई। फिर बोली, "अरी, तू किशन की मेरे पांचू गोपाल से बराबरी करती है ? इस बन्दर से ? समझती नहीं, तुझमें क्या इतनी भी समझ नहीं है ?"

"किशन और तुम तो एक ही पिता की सन्तान हो, फिर यह बन्दर कैसे हो गया ? मुझे

ज्यादा बातें बनाना नहीं आता, मगर इतना अवश्य कहूँगी कि मैंने तुम्हारे-जैसी कठोर हृदय की निर्लज्ज स्त्री आज तक नहीं देखी।" यह कहकर हेमांगिनी ने अपनी खिड़की बन्द कर ली।

साँझ हुई। पुरुषों के घर लौटने का समय हुआ तो कादम्बिनी ने आँगन के बीच खड़े होकर अपनी नौकरानी को सुनाते हुए कहा, "मेरा न्याय भगवान् ही करेंगे। कोई भाई-बहन में मनमुटाव कराएगा तो उसका कभी भला नहीं होगा। हमारे घर में किसी को दखल देने की जरूरत नहीं। बड़ी हितचिन्तक बनती है! तू कौन, मैं खामखाह! मैं किसी के घर की बातों में नहीं पड़ती और दूसरा कोई भी मेरे घर की बातों में न पड़े। नहीं तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा!"

प्रायः हेमांगिनी अपनी जेठानी की बातों को अनसुना कर जाती थी, पर आज वह ऐसा नहीं कर सकी। वह उठकर खिड़की में आ बैठी और बोली, "जीजी! इतनी जल्दी चुप क्यों हो गईं?

कुछ और जोर से बोलो ! जेठ जी के आने से पहले ही क्यों चुप हो गई ?"

कादम्बिनी तुरन्त झपटकर आंगन में आ गई और मोर्चा संभाल लिया। खिड़की में बैठी देवरानी की ओर देखकर बोली, "मैंने तुम्हारा नाम कब लिया ? यह तो वही बात हुई कि चोर की दाढ़ी में तिनका !"

हेमांगिनी ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "क्या तुम समझती हो कि दुनिया में एक तुम्हीं सयानी और समझदार हो, बाकी सब मूर्ख हैं ?"

अब कादम्बिनी ने अपना वास्तविक रूप दिखाना प्रारम्भ किया। बोली, "तुम समझती हो कि तुम्हारी बातों का किसी को कुछ पता नहीं चलता ? यह किशन जब आया था तो चूं तक नहीं करता था। और अब तुमने उसे सिखा-पढ़ाकर किसी काम का नहीं रहने दिया। आज यह तुम्हारे उकसाने से मेरे साथ जबान लड़ाने लगा। पूछ ले इस प्रसन्न की मां से।"

कादम्बिनी की नौकरानी प्रसन्न की मां

बोली, "हाँ, मँझली बहू, यह बात तो सच है। आज दोपहर को जब किशन भात छोड़कर उठ खड़ा हुआ तो मालकिन ने कहा कि नखरे किस बात के लिए दिखाते हो ? नहीं खाते हो तो मत खाओ। दो दिन में अपने-आप अकल ठिकाने आ जाएगी। तो तुनककर बोला, मँझली बहन के होते मुझे किसी का डर नहीं है।"

अपनी बात का समर्थन हो जाने से कादम्बिनी विजेता के स्वर में बोली, "क्यों, अब तो मालूम हो गया कि किसके बलबूते पर यह अकड़ता है ? मँझली बहू, साफ-साफ कहे देती हूँ, तुम उसे अपने पास बुलाकर सिखाया मत करो। भाई-बहन के बीच तुम क्यों पड़ती हो ?"

हेमांगिनी ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। भोले-भाले किशन ने कितना-कुछ सहन करने के बाद इतनी बात कहने का साहस किया होगा, यह सोचकर उसके आश्चर्य की सीमा न रही।

इस अकस्मात के कारण उसकी पहले से ही

खराब तबीयत और भी खराब हो गई। वह पलंग पर जाकर लेट गई।

□

पति ने घर में प्रवेश करते ही कह दिया, "आज भाभी के भाई के बारे में क्या झगड़ा कर बैठी हो ? अभी भाभी ने आकर मुझे सब बातें सुना दीं।"

हेमांगिनी ने क्षीण स्वर में उत्तर दिया, "तुम्हारी भाभी तो सदा ही व्यर्थ की बातें करती है। आज कर दीं तो नई बात क्या हो गई !"

"मैं क्या तुम्हारा स्वभाव जानता नहीं ? उस बार घर के ग्वाले के बारे में भी तुमने ऐसा ही किया था। मोती कुम्हार के भानजे का बाग तुम्हारी इस उदारता के कारण ही हाथ से निकल गया। क्या तुम अपना भला-बुरा भी नहीं समझती हो ? तुम्हें कब समझ आएगी ? तुम्हारा

यह स्वभाव कब जाएगा ?"

अब तो हेमांगिनी उठकर बैठ गई। वह पति के मुख की ओर देखकर बोली, "मेरा यह स्वभाव तो मरने पर ही जाएगा। हां, अन्तर्यामी भगवान् सब-कुछ जानते हैं। इस समय मेरी तबीयत ठीक नहीं है। इसलिए मेरे साथ झगड़े-टंटे की बातें मत करो।" यह कहकर वह सिर से पैर तक चादर ओढ़कर और दीवार की ओर करवट बदलकर लेट गई।

विपिन को उससे और कुछ कहने का साहस नहीं हुआ।

□

दूसरे दिन सवेरे हेमांगिनी ने ज्योंही अपनी ऊपरवाली मंजिल की खिड़की खोली, जेठानी की तीखी और कड़कती आवाज सुनाई दी। वह पति से कह रही थी, "किशन कल से भागा हुआ

है और तुमने उसकी कोई खोज-खबर नहीं ली।"

पति ने उत्तर दिया, "भाड़ में जाए! मैं क्यों खोजूं?"

इस पर कादम्बिनी हेमांगिनी को सुनाने के लिए ऊँचे स्वर में बोली, "जानते नहीं मुहल्ले-भर में हमारी निन्दा शुरू हो जाएगी और यहां रहना कठिन हो जाएगा! यहां हमारे शत्रु क्या कम हैं? यदि वह आवारा कहीं गिर-डूबकर मर-मरा गया तो समझ लो कि हम सबको जेल की हवा खानी पड़ेगी।"

हेमांगिनी खिड़की बन्द करके दूसरी ओर चली गई।

दोपहर को वह रसोईघर के बरामदे में बैठी भोजन कर रही थी कि अचानक चोरों की तरह दबे पांव किशन सामने आ खड़ा हुआ। उसके सिर के बाल लम्बे और मुंह उतरा हुआ था। हेमांगिनी ने पूछा, "कहां भाग गया था रे?"

"भागा तो नहीं था। कल रात दुकान पर ही सो गया था। मँझली दीदी, मुझे बड़े जोर की भूख लगी है।"

"जा, उसी घर में जाकर खा।" कहकर हेमांगिनी फिर भोजन करने लगी।

कुछ क्षण तक चुपचाप खड़ा रहने के बाद जब किशन जाने लगा तो हेमांगिनी ने उसे रोका और नौकरानी को उसके लिए भोजन परोसने के लिए कहा।

किशन अभी आधा भोजन ही खा पाया था कि बाहर से घबरायी हुई उमा आई और उसने चुपचाप संकेत से बताया कि पिताजी आ रहे हैं। इस तरह सहमी हुई लड़की को देखकर माँ को कुछ आश्चर्य हुआ। वह बोली, "आ रहे हैं तो तू क्यों घबरा रही है?"

किशन ने भी उमा के संकेत को देखा और समझ लिया। क्षणभर में ही उसका चेहरा पीला पड़ गया, जैसे उसकी चोरी पकड़ ली गई हो। वह अधखाए भात को छोड़ रसोईघर के दरवाजे

की ग्राड़ में जा खड़ा हुआ। उसकी देखादेखी उमा भी एक ओर को भाग गई। इतने में उसका पिता विपिन आ पहुँचा। उसकी दृष्टि किशन द्वारा अधखाई भात की थाली पर पड़ी तो उसने पूछ लिया, "इतना सारा भात थाली में जूठा छोड़कर कौन उठ गया है ? नलिन ?"

हेमांगिनी बोली, "नहीं, किशन खा रहा था। तुम्हारे डर के मारे बीच में खाना छोड़ किवाड़ के पीछे छिपा हुआ है।"

"क्यों ?"

हेमांगिनी ने रोषपूर्वक कहा, "यह तो तुम्हीं जानते हो। न केवल किशन, इसी भय से उमा भी छिप गई है।"

विपिन समझ गए कि आज हेमांगिनी किसी बात के लिए रुष्ट है। उसे प्रसन्न करने के लिए विपिन ने हँसते हुए कहा, "उमा किसके डर से भागी ?"

हेमांगिनी बोली, "मैं क्या जानूँ ? सम्भवतः अपनी माँ का अपमान अपनी आँखों देखने के

भय से ही भाग गई।" फिर वह लम्बी साँस खींचकर बोली, "किशन पराया ठहरा, वह तो छिपेगा ही, किन्तु अपनी बेटी तक यह विश्वास नहीं कर सकी कि उसकी माँ को इतना अधिकार है कि वह किसी को एक जून भात खिला सके।"

अब विपिन की समझ में आया कि मामला क्या है। उन्होंने बात टालने के लिए कहा, "अच्छा छोड़ो इन बातों को। यह बताओ कि अब तुम्हारी तबीयत कैसी है? मैं सोच रहा हूँ कि नगर से केदार डॉक्टर को बुला भेजूँ।"

पर हेमांगिनी ने इन बातों का कोई उत्तर न देकर पूछा, "तुमने उमा के सामने किशन से कुछ कहा था क्या?"

विपिन मानो आकाश से धरती पर आ गिरे, उन्होंने कहा, "मैंने? नहीं तो! हाँ, याद आया। सम्भवतः कुछ कहा था कि भाभी और भैया हम पर बिगड़ते हैं। जान पड़ता है कि कहीं पास ही खड़ा सुन रही होगी। आश्चर्य है..."

"जानती हूँ।" कहकर हेमांगिनी ने बात दबा दी। विपिन के रसोईघर से जाते ही उसने किशन को बुलाकर कहा, "यह लो चार पैसे और जाकर दुकान से चना-मुरमुरा खरीदकर खा लो। भूख लगने पर अब मेरे पास मत आना। तेरी मँझली बहन को इतना अधिकार नहीं है कि वह बाहर के आदमी को एक ग्रास अन्न खिला सके।"

किशन चुपचाप चला गया।

□

कोई पाँच-छः दिन बाद एक रोज तीसरे पहर विपिन ने अत्यन्त उदास चेहरा बनाकर घर में प्रवेश किया और कहा, "हेमांगिनी, यह मेरी जान को क्या झंझट पैदा कर रखा है! किशन तुम्हारा कौन है जो उसके लिए भाभी से झगड़ा मोल लेती रहती हो? इस बात के लिए भैया भी बहुत नाराज हैं।"

इससे कुछ ही देर पहले अपने घर में बैठकर कादम्बिनी ने अपने पति को सुनाते हुए मँझली बहू पर जो अपशब्दों के तीर छोड़े थे, उनमें से एक भी व्यर्थ नहीं गया था। उन विषबुझे बाणों के घाव बड़े गहरे थे और उनमें जलन भी खूब हो रही थी; पर जेठ जी सामने बैठे थे, इसलिए वह कोई प्रतिकार कर नहीं सकी। इस समय सहने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं था।

पुराने जमाने में जिस तरह मुसलमान गाय को आगे करके राजपूतों की सेना पर वार करते थे और धर्मभीरु राजपूत गोहत्या के भय से प्रत्याक्रमण नहीं कर पाते थे, ठीक वैसी ही स्थिति हेमांगिनी की थी।

पति की बात सुनकर हेमांगिनी का क्रोध उबल पड़ा। बोली, "क्या कहा, जेठ जी नाराज हो गये हैं? इतनी बड़ी आश्चर्य की बात सुनकर इस पर सहसा विश्वास तो नहीं होता! तो अब यह बताओ कि क्या करने से वह प्रसन्न होंगे?"

विपिन को यह उत्तर बहुत ही अनुचित लगा। पर अपना रोष उन्होंने प्रकट नहीं किया। ऐसा उनका स्वभाव ही नहीं था। इसलिए मन की बात को मन में ही रखकर उन्होंने कहा, "कुछ भी हो। बड़ों के साथ इसे..."

उनके मुँह की बात पूरी भी नहीं होने पाई थी कि हेमांगिनी बोल पड़ी, "मैं सब-कुछ जानती हूँ। मैं कोई अबोध बच्ची नहीं हूँ जो बड़ों की मान-मर्यादा रखना न जानती होऊँ। किन्तु मैं इस अनाथ किशन को चाहती हूँ, इसलिए वे मुझे दिखा-दिखाकर उसे दिन-रात सताते रहते हैं।"

उसका कठोर स्वर कुछ नरम हो गया। किन्तु उसका मन अब भी संतप्त था, दुःखी था। विपिन इस मामले में मन से अपनी भाभी के पक्ष में था। वह इस पराए लड़के को लेकर अपने भाई-भाभी से बिगाड़ना नहीं चाहता था। जब उसने देखा कि पत्नी कुछ ढीली पड़ रही है तो बोला, "सताते-वताते कुछ नहीं हैं। अपने सम्बन्धी को अनुशासन में रखकर काम-धन्धा सिखाते हैं।

इससे तुम्हें क्यों कष्ट होता है। फिर यह उनके घर का मामला है। हम दखल देने वाले कौन होते हैं ? तुम यह भी नहीं सोचती कि वे हमारे बड़े हैं ?"

हेमांगिनी अपने पति के मुख की ओर देख-कर कुछ विस्मित हुई। वह चौदह-पन्द्रह वर्ष से इस घर में है, पर इससे पूर्व उसने अपने पति में ऐसी भ्रातृ-भक्ति कभी नहीं देखी थी। पति के इस रूप को देखकर उसका दुःख दूना हो गया। वह बोली, "यदि वे बड़े हैं, तो मैं भी बाल-बच्चों वाली हूँ। यदि बड़े अपने मान-सम्मान को स्वयं नष्ट कर डालें तो मैं उसे कैसे बचा सकती हूँ ?"

विपिन इस बात का कुछ उत्तर देना चाहते थे पर रुक गए। इसी समय दरवाजे के बाहर से एक क्षीण स्वर सुनाई दिया, "मँझली दीदी !"

पति-पत्नी ने एक-दूसरे की ओर देखा। विपिन हँस पड़े पर हँसी व्यंग्य से भरी हुई थी। हेमांगिनी होंठ को दांत से भींचकर द्वार पर आ गई और चुपचाप किशन को देखने लगी।

अपनी मँझली दीदी को देखते ही किशन प्रसन्नता से खिल उठा। वह बोला, "मँझली दीदी, अब तबीयत कैसी है?"

"हेमांगिनी क्षणभर तो कुछ भी नहीं बोली। जिसे लेकर पति-पत्नी में अभी-अभी विवाद हो चुका था, उसी को सामने पाकर हेमांगिनी ने अपना सारा क्रोध उस पर उँडेल दिया। उसने धीरे से किन्तु दृढ़ स्वर में कहा, "तू रोज-रोज यहाँ क्यों आता है रे?"

इस उत्तर को सुनकर किशन का कलेजा धक् से बैठ गया। स्वर की दृढ़ता से उसे यह समझते देर नहीं लगी कि कम-से-कम यह बात मजाक में नहीं कही गई है।

हेमांगिनी का यह व्यवहार उसके लिए आश्चर्यजनक था। लज्जा और ग्लानि से उसका चेहरा लटक गया। बड़ी कठिनाई से वह कह पाया, "देखने आया हूँ।"

विपिन ने हँसकर कहा, "तुम्हें देखने आया है!"

विपिन की यह हँसी हेमांगिनी के लिए असह्य हो उठी। उसने आहत नागिन की तरह पति की ओर देखकर किशन से कहा, "आज से तू यहाँ मत आना, जा।"

"अच्छा" कहकर किशन मुड़ा। वह लम्बी साँस खींचकर अपने भाग्य की विडम्बना पर हँस दिया। पर यह हँसी रोने से भी बढ़कर दुःख देनेवाली थी। वह मुँह तोड़ा करके चला गया।

हेमांगिनी ने किशन की मनोदशा को ठीक से देखा और समझा था। उसकी मनोदशा भी किशन से भिन्न नहीं थी। उसने एक बार फिर पति की ओर देखा और कमरे से बाहर निकल गई।

□

चार-पाँच दिन बीत गए, पर हेमांगिनी का ज्वर नहीं घटा। डॉक्टर उसे देख गया था और

कह गया था कि छाती में ठंड बैठ गई है। अभी-अभी साँझ होने पर घर में दीये का प्रकाश हुआ कि उसका बेटा ललित नए कपड़े पहनकर उसके सामने आ खड़ा हुआ और बोला, "माँ, आज बल बाबू के घर पर कठपुतली का नाच होगा। मैं चला जाऊँ?"

हेमांगिनी ने हँसकर कहा, "क्यों रे ललित! मैं पाँच-छह दिन से बीमार पड़ी हुई हूँ। तूने एक बार भी नहीं पूछा और न मेरे पास आकर बैठा?"

ललित लज्जित होकर सिरहाने के पास आ बैठा। हेमांगिनी ने स्नेह से उसकी पीठ पर हाथ फेरकर पूछा, "यदि मैं इस बीमारी से मर जाऊँ तो तू क्या करेगा रे? खूब रोएगा न?"

"छोड़ो माँ, तुम अच्छी हो जाओगी।" इतना कहकर ललित ने अपना हाथ माँ के हृदय पर रख दिया। माँ ने भी उस हाथ को अपने दोनों हाथों में ले लिया और उसके स्पर्श-सुख का अनुभव करती हुई लेटी रही। ज्वर के समय पुत्र

के हाथ का यह स्पर्श उसे बड़ा सुखद लगा। वह चाहती थी कि ललित इसी तरह उसके पास बैठा रहे पर, ललित का मन तो कठपुतली के नाच की ओर खिंचा जा रहा था। वह वहां से भागकर तुरन्त दत्त बाबू के घर पहुँच जाना चाहता था। हेमांगिनी से पुत्र का यह भाव छिपा नहीं रहा। उसने कहा, "अच्छा, जा। देख, ज्यादा देर मत करना! जल्दी लौट आना।"

आज्ञा मिलते ही ललित द्वार की ओर लपका और जाते-जाते कहता गया, "मैं जल्दी ही आ जाऊँगा।"

लेकिन क्षणभर बाद ही वह फिर लौट आया। बोला, "माँ, एक बात कहूँ?"

माँ ने हँसते हुए पूछा, "पैसे चाहिएँ? वहाँ अलमारी में रखे हैं। ले-ले। पर बता देना कितने लिये।"

"नहीं माँ, पैसे नहीं चाहिएँ। और ही बात है।"

माँ को कुछ आश्चर्य हुआ—"पैसे नहीं चाहिएँ तो फिर क्या बात है?"

ललित माँ के और भी पास खिसक आया—"माँ, ज़रा किशन को आने दोगी? वह कमरे के भीतर नहीं आएँगे। बस, दरवाज़े में से देखकर चले जाएँगे। वह कल भी बाहर आकर बैठे हुए थे और आज भी बैठे हुए हैं।"

हेमांगिनी झट बिछौने पर से उठ बैठी और बोली, "जा, उसे भीतर बुला ला। हाय! बेचारा बाहर बैठा है। तूने मुझे कल क्यों नहीं बताया?"

"किशन मामा भीतर आने में डरते जो हैं।" इतना कहकर ललित चला गया। क्षणभर बाद किशन कमरे में आया, ज़मीन की ओर तकता हुआ। आकर दीवार के सहारे खड़ा हो गया।

हेमांगिनी ने स्नेहभरे स्वर से कहा, "आओ किशन! खड़े क्यों हो? बैठ जाओ।"

जब किशन उसी तरह चुपचाप खड़ा रहा तो हेमांगिनी ने उठकर और उसका हाथ पकड़कर

बिठा लिया, फिर उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "उस दिन मैंने तुम्हें कुछ कह दिया था, सम्भवतः इसीलिए तू अपनी मँझली दीदी को भूल गया।"

एकाएक किशन फूट-फूटकर रोने लगा और उसकी हिचकी बँध गई। हेमांगिनी को उसके रोने से कुछ आश्चर्य हुआ क्योंकि आज तक किशन को किसी ने रोते नहीं देखा था। अनेक दुःख सहकर भी चुप रहता है, कभी किसी के सामने रोता नहीं। इस बात को हेमांगिनी खूब जानती है। वह समझ गई कि किशन के हृदय को बहुत बड़ा आघात लगा है। उसने किशन को पुचकारते हुए कहा, "अरे भैया, सर्दी भी कहीं रोके है?"

इसके उत्तर में किशन ने बलपूर्वक रुलाई रोकने का प्रयत्न करते हुए कहा, "डाक्टर क्या कहता है कि छाती में सर्दी बैठ गई, मँझली दीदी?"

हेमांगिनी ने हँसते हुए कहा, "तो तू इसलिए रो रहा है? राम-राम, तू भी कैसा लड़का है।"

यह कहते-कहते हेमांगिनी की आंखों से भी टप-टप आंसू टपक पड़े। उसने किशन से कहा, "क्यों रे किशन, यदि मैं मर जाऊं तो तुम और ललित दोनों मिलकर मुझे गंगाजी तो पहुंचा आओगे न? ...क्यों, पहुंचा सकोगे?"

इसी समय "मंझली बहू, आज तुम्हारा जी कैसा है?" कहती हुई कादम्बिनी दरवाजे पर आ खड़ी हुई। थोड़ी देर तक किशन की ओर तीखी नजर से देखती हुई बोली, "लो, यह भी यहां है। अरे यह क्या! मंझली बहू के सामने टेसुए बहा रहा है? यह ढोंगी कितना चालाक है!"

अधिक देर बैठने में असमर्थ होने के कारण हेमांगिनी अभी-अभी लेटी थी, पर जेठानी की बातें सुनकर एकदम सीधी तनकर उठ बैठी और बोली, "मुझे आज छः-सात दिन से बुखार आ रहा है। मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूं, इस समय तुम चली जाओ।"

कादम्बिनी यह सुनकर पहले तो कुछ सकपकाई किन्तु फिर कुछ सँभलकर बोली, "मँझली बहू, मैंने तुमसे तो कुछ कहा नहीं। अपने भाई को कह रही हूँ, इस पर तुम क्यों काटने को दौड़ती हो?"

हेमांगिनी ने कहा, "तुम्हारी डाँट-डपट तो कभी रुकती ही नहीं। यहाँ मेरे सामने डाँट-डपट करने की आवश्यकता नहीं, और मैं करने भी नहीं दूँगी। तुम अपने घर चाहे जो कुछ करती रहना।"

"तो क्या तुम मुझे अपने घर से निकाल दोगी?"

हेमांगिनी ने फिर हाथ जोड़कर कहा, "जीजी, मेरा जी ठीक नहीं है। मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ या तो चुप रहो या चली जाओ।"

कादम्बिनी ने भँपकर कहा, "अपने भाई को भी कुछ कहने का अधिकार मुझे नहीं है क्या?"

"अपने घर जाकर अपने इस अधिकार का प्रयोग करना।" हेमांगिनी ने कहा।

"सो तो करूँगी ही। मैं देख रही हूँ कि तुम दोनों हर घड़ी मेरी निन्दा-चुगली में ही लगे रहते हो। इसे तो मैं आज ही मजा चखाती हूँ। झूठा कहीं का! जिस पत्तल में खाता है, उसी में छेद करता है। मैंने कहा कि गाय के गले में बाँधने की रस्सी टूट गई है, जरा जाकर ले आ, तो बोला बहन, तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ, जरा कठपुतली का तमाशा देख आऊँ। यह यहाँ कठपुतली का तमाशा देखा जा रहा है?"

यह कहकर कादम्बिनी पैर पटकती हुई वहाँ से चली गई।

हेमांगिनी कुछ देर सुन्न बैठी रही, फिर लेटकर बोली, "तू कठपुतली का तमाशा देखने क्यों नहीं चला गया रे? चला गया होता तो ये सब बातें न होतीं। जब ये लोग नहीं चाहते कि तू हमारे यहाँ आया करे तो फिर क्यों चला आता है रे?"

किशन बिना कुछ कहे-सुने चुपचाप चला गया। किन्तु थोड़ी ही देर बाद फिर लौट आया

और बोला, "बहन, हमारे गाँव की विशालाक्षी देवी की बड़ी प्रसिद्धि है। उसकी पूजा करने से सारे दुःख-रोग दूर हो जाते हैं। तुम देवी की पूजा दे दो। मैं पहुँचा दूँगा।"

अभी-अभी व्यर्थ की बक-झक होने से हेमांगिनी का मन बहुत ही दुःखी था। उसे भय भी था कि आज जेठानी इस अभागे किशन को जरूर कोई कठोर दण्ड देगी। इसी की चिन्ता से वह क्षुब्ध और दुःखी थी। किशन जब फिर लौट आया तो हेमांगिनी उठकर बैठ गई। उसको अपने पास बिठाकर और उसकी पीठ पर हाथ फेरती हुई वह रो पड़ी —"अच्छी हो जाऊँगी तब तेरे पास पूजा की सामग्री भेज दूँगी। तू अकेला चला जाएगा क्या रे?"

किशन उत्साह के कारण फूला नहीं समाया। बोला, "बड़े मजे में अकेला चला जाऊँगा मँझली दीदी! तुम आज ही मुझे एक रुपया देकर भेज दो न! मैं कल सवेरे भेंट-पूजा चढ़ाकर तुम्हारे लिए प्रसाद ला दूँगा। उस प्रसाद को खाते ही

तुम्हारा रोग दूर हो जाएगा। मुझे आज ही भेज दो न मँझली दीदी!"

हेमांगिनी ने देखा कि किशन जाने के लिए व्याकुल है तो बोली, "किन्तु कल लौटने पर ये लोग तुझे खूब मारेंगे।"

मार के भय से किशन पहले तो कुछ सहमा, किन्तु तुरन्त ही बोला, "भले ही मारें, तुम्हारा रोग तो दूर हो जाएगा।"

हेमांगिनी की आँखों से फिर आँसू बहने लगे। उसने कहा, "क्यों रे किशन! मैं तो तेरी कुछ लगती नहीं हूँ। फिर मेरे लिए तू इतनी चिन्ता क्यों करता है?"

भला इस प्रश्न का उत्तर किशन क्या दे! वह कैसे समझावे कि वह हेमांगिनी को अपनी माँ की तरह मानता है? वह कुछ क्षण हेमांगिनी के मुँह की ओर देखकर बोला, "मँझली दीदी, तुम्हारी छाती में सर्दी बैठ गई है, इसी से तुम्हारा रोग दूर नहीं हो रहा है।"

उसकी बात पर हेमांगिनी को थोड़ी हँसी आ गई। बोली, "मेरी छाती में सर्दी बैठ गई है तो इससे तुझे क्या! तू क्यों चिन्ता में घुला जा रहा है?"

किशन ने कहा, "मुझे चिन्ता क्यों नहीं होगी, मँझली दीदी? छाती में सर्दी लग जाना अच्छा नहीं होता है। यदि रोग बढ़ जाए तो···"

"तो मैं तुझे बुला भेजूँगी। पर बिना बुलाए मत आना, समझे!" हेमांगिनी ने कहा।

"क्यों न आऊँ, मँझली दीदी?"

हेमांगिनी ने दृढ़ स्वर में कहा, "नहीं, अब मैं तुझे यहाँ नहीं आने दूँगी। बिना बुलाए यदि तू आएगा तो मैं नाराज हो जाऊँगी।"

किशन ने उसके मुँह की ओर देखकर डरते हुए पूछा, "अच्छा तो बताओ, कल सवेरे किस समय बुलवाओगी?"

"कल सवेरे तुझे यहाँ क्या काम है रे?" हेमांगिनी ने पूछा।

किशन ने कहा, "कल सवेरे न सही, दोपहर को आ जाऊँगा। अब तो ठीक है न ?"

उस समय उसके चेहरे पर एक ऐसी अकुलाहट का भाव था कि उसके अनुरोध को टाला नहीं जा सकता था। हेमांगिनी इस अभागे अनाथ बालक के लिए मन-ही-मन बहुत दुःखी हुई। किन्तु वह जानती थी कि बाहर से कठोरता का बरताव कर यदि उसे यहाँ आने से रोका नहीं गया तो इसके दुःखों में बढ़ोत्तरी ही होगी। यहाँ हेमांगिनी के पास आने के कारण उसे जो दण्ड दिया जाएगा, वह तो सम्भवतः झेल लेगा, किन्तु हेमांगिनी यह नहीं सह पाती।

हेमांगिनी की आँखें फिर सजल हो गईं। तो भी उसने मुँह फेरकर रुखाई से कहा, "मुझे तंग मत कर रे किशन ! यहाँ से चला जा। जब बुलाऊँ, तभी आना। यों जब जी चाहे तब आकर मुझे तंग मत करना, समझे !"

"नहीं, तंग तो मैं नहीं करता।" इतना कह-कर किशन लज्जा और शर्म के मारे झुका हुआ चेहरा लेकर बाहर चला गया।

अब तक हेमांगिनी अपने को बरबस रोककर नकली कठोरता दिखा रही थी। पर किशन के जाते ही उसका हृदय पिघलकर आंसुओं के रास्ते झरझर बहने लगा। उसने स्पष्ट रूप से अनुभव किया कि यह अपनी खोई मां को ढूंढने पा गया है।

हेमांगिनी ने आंखें पोंछकर मन में कहा—किशन, तू ऐसा उदास चेहरा बनाकर यहां से चला गया? किन्तु तेरी यह मंझली दीदी तो तुझसे भी अधिक विवश है। इसमें इतनी भी सामर्थ्य नहीं कि तुझे खींचकर अपने कलेजे से लगा ले।

उमा ने आकर समाचार सुनाया, "मां, कल जो किशन मामा दुकान के काम को न आकर यहां आकर बैठ गए थे न, उसके लिए ताऊजी ने उन्हें इतना पीटा कि नाक से···"

हेमांगिनी ने उसे बीच में ही टोककर कहा, "अच्छा-अच्छा, रहने दे। आकर अपना काम कर।"

अचानक झिड़के जाने से उमा का मुंह लटक गया। वह चुपचाप जाने लगी थी कि माँ ने पुकारकर कहा, "अरी सुन तो, क्या नाक से बहुत खून निकला?"

उमा पलटकर बोली, "नहीं, थोड़ा-सा ही निकला था।"

"अच्छा, तू जा।"

दरवाजे के पास पहुँचकर उमा ने कहा, "माँ, देखो किशन मामा तो यहीं खड़े हैं।"

किशन ने यह बात सुन ली। उसकी हिम्मत कुछ बढ़ी। उसने कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा, "मँझली बहन, अब जी कैसा है?"

क्षोभ और दुःख के मारे हेमांगिनी पागलों की तरह चीखकर बोली, "तू फिर बिना बुलाए आ गया? बता, यहाँ क्या करने आया है? जा,

जल्दी जा यहाँ से। सुनता नहीं है? मैं कह रही हूँ मेरे सामने से दूर हट जा।"

किशन को जैसे काठ मार गया। वह आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगा। हेमांगिनी इस पर और भी बिगड़ी और पहले से भी ज्यादा चिल्लाकर बोली, "कहने पर भी अभी तक यहीं खड़ा है? जाता क्यों नहीं है?"

किशन सिर झुकाकर और 'जाता हूँ' कहकर चला गया। उसके चले जाने पर हेमांगिनी निढाल होकर बिछौने में गिर पड़ी और बड़बड़ाने लगी, "मूर्ख से कितनी बार कह चुकी कि मेरे पास मत आया कर, फिर भी 'मँझली दीदी' की रट लगाता चला आता है। उमा, जाकर शिब्बू से कह दे कि अब उसे घर के भीतर न आने दे।"

उमा ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप बाहर चली गई।

रात को हेमांगिनी ने अपने पति से रुँधे हुए स्वर में कहा, "आज तक तो मैंने तुमसे कभी कुछ

मांगा नहीं, किन्तु आज इस बीमारी की दशा में एक भिक्षा मांगती हूं। बतलाओ, दोगे ?"

विपिन ने अनमने होकर कहा, "क्या चाहती हो ?"

हेमांगिनी ने कहा, "किशन को मुझे दिला दो। वह बेचारा बहुत ही दुःखी है। उस अनाथ के माता-पिता नहीं हैं। ये उसके बहन-बहनोई दिन-रात उसे सताते हैं। उसके दुःखों की सीमा नहीं है। मैं जब उसकी राम-कहानी सुनती हूं तो मेरा कलेजा मुंह को आता है। उसका दुःख मुझसे देखा नहीं जाता। इसी से कहती हूं कि उसे मुझे दिला दो।"

विपिन ने मुस्कराकर कहा, "नहीं देखा जाता तो अपनी आंखें बन्द कर लो न ! बस, सब झगड़ा मिट जाएगा।"

पति का यह मजाक हेमांगिनी के कलेजे में तीर की तरह चुभ गया। उसका पति उसकी खिल्ली उड़ा रहा था। और कोई समय होता तो हेमांगिनी इस सब को चुपचाप नहीं सहती।

पर आज मारे दुःख के उसकी जान निकली जा रही थी। इसलिए उसने यह भी सह लिया। वह हाथ जोड़कर बोली, "तुम्हारी सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि मैं उसे ललित की तरह ही अपना अपना बेटा मानती हूँ। उसे मुझे दिला दो। अब वह पढ़-लिखकर स्याना हो जाएगा तो उस समय जैसा तुम चाहो, वैसा करना। तब मैं कुछ नहीं कहूँगी।"

विपिन ने कुछ नरम होकर कहा, "तुम भी कैसी बातें करती हो! वह क्या कोई मेरी दुकान का थान या लावल है जो लाकर तुम्हें दे दूँ? दूसरों का सम्बन्धी है और उनके घर आया हुआ है। तुम उनके बीच में पड़कर इतना दुःख-दर्द क्यों अनुभव करती हो? दुनिया में कितना-कितना दुःख-दर्द है, किस-किसका दुःख बाँटोगी! किस-किस को अपना बेटा बनाकर अपने पास रखोगी!"

हेमांगिनी अपनी विवशता और पति की उपेक्षा से रो पड़ी। फिर आंचल से आंसू पोंछती

हुई बोली, "यदि तुम मेरी इस माँग को पूरा करना चाहो तो जेठ और जेठानी जी से कहकर बड़े मजे में उसे अपने घर ला सकते हो। वे उसे तुम्हें सौंपने में जरा भी हिचकिचाएँगे। वे तो वैसे ही उसे गले पड़ा ढोल समझकर निभा रहे हैं। मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ। उसे ला दो।"

विपिन ने कहा, "अच्छा मान लो कि ऐसा हो सकता है, तो भी हम कौन-से ऐसे धनवान् हैं जो उसका पालन-पोषण करें और उसकी पढ़ाई-लिखाई पर खर्च करें?"

हेमांगिनी ने कहा, "पहले तो तुम मेरी किसी भी बात को नहीं टालते थे। अब मैंने ऐसा कौन-सा अपराध कर दिया जो तुम मेरी इस बात पर जरा भी ध्यान नहीं दे रहे हो? मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ कि मुझसे उसका दुःख तनिक भी नहीं देखा जाता! मैं अनुभव करती हूँ कि वह किशन जैसे मेरे दिल का टुकड़ा है। तो भी तुम मेरी प्रार्थना पर ध्यान नहीं देते हो। वह अभागा यहाँ चला ही आया है तो क्या तुम सब लोग

मिलकर उसे मार ही डालोगे ? मैं ही उसे अपने यहां लाने को कहूंगी, देखूं वे लोग क्या कहते हैं!"

बिपिन ने पत्नी के हठ से चिढ़कर कहा, "मैं उसे खिलाने-पिलाने का खर्चा नहीं उठा सकूंगा।"

हेमांगिनी ने कहा, "मैं खिला-पिला लूंगी। क्या मैं इस घर की कुछ भी नहीं हूं जो अपने लड़के को खाना-कपड़ा तक न दे सकूं ? मैं कल ही उसे बुलाकर अपने घर रखूंगी और यदि जेठानी जी नहीं मानेंगी तो मैं उसे थाने में भेजकर जोर-जबर्दस्ती करने की शिकायत करवा दूंगी।"

पत्नी की जिद से बिपिन ने क्रोध में भरकर कहा, "अच्छी बात है। देखा जाएगा।"

यह कहकर वह बाहर चले गये।

दूसरे दिन सवेरे ही पानी बरसने लगा। हेमांगिनी अपने कमरे की खिड़की खोलकर आकाश में छाए बादलों की ओर देख रही थी। इतने में जेठ के घर से उसे पांचु गोपाल का स्वर सुनाई दिया। वह चिल्लाकर कह रहा था, "मां,

जरा अपने इस भाई को तो देखो। पानी में भीगते हुए आ गए हैं।"

"झाड़ू कहाँ है रे? मैं इसकी खबर लेती हूँ।" कहती और दाँत पीसती हुई कादम्बिनी तुरन्त बाहर निकली और सिर पर आँचल ओढ़कर ड्योढ़ी पर जा पहुँची।

भावी अनिष्ट की आशंका से हेमांगिनी की छाती काँप उठी। उसने ललित को बुलाकर कहा, "जा तो बेटा जरा अपने ताऊ जी के घर और देख के आ कि तेरे किशन मामा कहाँ से आए हैं?"

ललित दौड़ा हुआ गया और थोड़ी ही देर बाद लौटकर बोला, "पाचू भैया ने उन्हें मुर्गा बनाकर बैठा रखा है और पीठ पर दो ईंटें रख दी हैं।"

हेमांगिनी का कण्ठ सूख चला। उसने पूछा, "उसने क्या गड़बड़ की है?"

ललित ने कहा, "कल दोपहर को उन्हें ग्वालों के यहाँ तगादे को भेजा था। वहाँ से तीन

रुपए वसूल करके मामा कहीं भाग गए थे। वे तीनों रुपए खर्च करके अभी-अभी आए हैं।"

हेमांगिनी को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने पूछा, "किसने कहा कि उसने रुपए वसूल कर लिये थे ?"

"लक्ष्मण स्वयं ही आकर कह गया है।" यह कहकर अखिल पढ़ने चला गया।

इसके बाद दो-तीन घण्टे तक उस ओर कोई शोर नहीं सुनाई दिया। दस बजे के लगभग रसोई बनानेवाली ब्राह्मणी हेमांगिनी के लिए भोजन ले आई। हेमांगिनी बिछौने में उठ-बैठने की सोच रही थी कि इतने में उसके कमरे के बाहर महाभारत के युद्ध जैसा कोलाहल सुनाई दिया। कादम्बिनी के पीछे उसका बेटा गोपाल था जो किशन की कान पकड़कर खींचता ला रहा था। सबसे पीछे कादम्बिनी के पति महाशय भी चले आ रहे थे। इन्हीं लोगों ने विपिन को दुकान से बुलाने के लिए आदमी भेजा हुआ था।

ऐसा लगता था कि आज इस झगड़े-टंटे का फैसला होकर रहेगा।

हेमांगिनी ने जेठ जी को आते देखकर सिर ढक लिया और बिछौने से उठकर एक कोने में जाकर खड़ी हो गई। तुरन्त ही उसके जेठ ने उसे सम्बोधित करके कहना आरम्भ किया, "मँझली बहू, देखता हूँ कि तुम्हारे कारण हम इस मकान में नहीं रह सकेंगे। विपिन से कहकर हमारे मकान का मूल्य हमें चुका दो जिससे हम दूसरी जगह जाकर रहने लगें। फिर तुम यहाँ चैन-आराम से रहो। यह रोज-रोज का कलह-क्लेश अब हमसे सहन नहीं होता।"

हेमांगिनी की समझ में कुछ नहीं आया कि ऐसी क्या बात हो गई है। वह चुपचाप अपनी जगह खड़ी रही। कादम्बिनी ने देखा कि मँझली बहू अपने जेठ के सामने तो मुँह खोलेगी नहीं और इस तरह लड़ाई भी आगे नहीं बढ़ेगी। इसलिए अब उसने स्वयं लड़ाई का मोर्चा सँभाला। बोली, "मँझली बहू, मैं तुम्हारी जेठानी

हूँ। तुम मेरी बात को कुतिया के भौंकने से अधिक महत्त्व नहीं देती हो। किन्तु मैंने तुमसे हजार बार कहा कि प्रेम का झूठा दिखावा करके मेरे भाई को मत बिगाड़ो। बोलो, मैंने तुमसे कहा था कि नहीं? तुम उसके साथ दो दिन दुलार कर सकती हो। यह काम आसान भी है। पर उसका सदा का बोझ तो तुम उठाओगी नहीं। वह तो हमें ही उठाना पड़ेगा। फिर तुम उसे क्यों बिगाड़ रही हो?"

हेमांगिनी ने धीरे से पूछा, "हुआ क्या है? किशन ने क्या किया है? कुछ पता भी तो चले!"

कादम्बिनी ने नाक-भौं चढ़ाकर और हाथ मटकाकर कहा, "बहुत अच्छा हुआ है! बहुत बढ़िया हुआ है! तुम्हारे सोख और लाड मिलने से आदमी से उगाहे हुए रुपए चुराना सीख गया है। दो-चार बार और अपने पास बुलाकर सिखाओ-पढ़ाओगी तो सन्दूक का ताला तोड़ना और दीवार में सेंध लगाना भी सीख जाएगा।"

एक तो पिछले कई दिनों से हेमांगिनी बीमार है। स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया है। फिर उस पर यह झूठा आरोप लगाया जा रहा है। उसके धीरज का बांध टूट गया। आज तक कभी भी उसने जेठ जी के सामने मुंह नहीं खोला था। किन्तु आज उससे चुप नहीं रहा गया। उसने धीरे से कहा, "क्या मैंने उसे चोरी करना और डाका डालना सिखाया है जीजी?"

कादम्बिनी ने तुनककर कहा, "मैं कैसे जानूं, तुमने सिखलाया है या नहीं। किन्तु पहले तो वह ऐसा काम नहीं करता था। फिर तुम्हीं बताओ यह कहां से सीख आया? मैंने अपनी आंखों देखा है कि तुम दोनों लुक-छिपकर कितनी-कितनी देर बात करते रहते हो। क्या बातें करते हो, यह मैं भी तो जानूं! तुम हर बात में उसका पक्ष लेती हो, उसे उकसाती हो।"

थोड़ी देर के लिए हेमांगिनी को जैसे काठ मार गया हो। उसके ऊपर जैसा झूठा लांछन लगाया गया था, उसकी वह कल्पना भी नहीं कर

सकती थी। उसे इस नीचतापूर्ण आक्रमण से बड़ा आघात लगा। कुछ क्षण बाद वह सँभल गई। घायल सिंहनी की तरह वह बाहर निकल आई। उसकी आँखें अंगारों की तरह जल रही थीं। जेठ को सामने देखकर उसने सिर पर आँचल तो सँभाल लिया, पर अपने क्रोध को नहीं सँभाल सकी। उसने अपनी जेठानी से धीरे, किन्तु दृढ़ता के साथ कहा, "तुम इतनी नीच हो कि तुम्हारे साथ बात करने में भी मुझे घृणा होती है। और उससे भी बढ़कर तुम्हारी निर्लज्जता का प्रमाण यह है कि तुम इस लड़के को अपना भाई भी कहती हो। मनुष्य यदि एक पशु पालता है तो उसे भी भरपेट खाने को देता है। किन्तु इस अभागे अनाथ बालक से सभी तरह के काम लेकर भी कभी तुमने इसे भरपेट भोजन नहीं दिया। यदि जब-तब मैं इसे न खिलाती तो यह अब तक भूखों मर गया होता। वह मेरे पास पेट की आग को बुझाने आता है, दुलार-प्यार पाने के लिए नहीं।"

कादम्बिनी ने कहा, "हम लोग इसे खाने को नहीं देते, केवल काम लेते हैं और तुमने इसे खिला-पिलाकर बचा रखा है ?"

हेमांगिनी ने कड़ककर उत्तर दिया, "मैं बिल्कुल ठीक कहती हूँ। आज तक तुमने उसे एक दिन भी भरपेट खाने को नहीं दिया। हाँ, मार खाने को उसे बराबर मिलती है। काम लेने में तुम कभी कसर नहीं रखती हो। तुम लोगों के कलह-क्लेश के डर से मैंने उसे हजार बार इस घर में आने के लिए मना किया। किन्तु भूख की आग उससे सही नहीं जाती तो रोकने पर भी चला आता है और यहाँ उसे भर-पेट भोजन मिल जाता है। वह मेरे पास चोरी-डकैती की सीख और सलाह लेने नहीं आता। किन्तु तुम्हारी नीचता की हद यह है कि तुमसे यह भी सहन नहीं होता।"

अब की बार उत्तर जेठ ने दिया। उन्होंने किशन को आगे खींचकर उसकी धोती के एक छोर में बँधा, केले के पत्ते का एक दोना निकाला

और क्रोध के साथ कहा, "हम नीच लोग क्यों उसे अच्छी आंखों से नहीं देख सकते, सो तुम भी जरा अपनी आंखें खोलकर देख लो। संझली बहू, तुम्हारे सिखाने का ही यह परिणाम है कि यह हमारे रुपए चुराकर तुम्हारे भजे के लिए न जाने किस-किस देवी-देवता की भेंट-पूजा चढ़ाकर यह प्रसाद लाया है। यह लो!"

इतना कहकर उन्होंने उस दोने में से दो संदेस, कुछ फूल-बेल-पत्र आदि निकालकर सामने कर दिये।

कादम्बिनी की आंखें फैल गईं। उसने कहा, "अरी मैया री! कैसा चुपा शैतान है! देखने में एकदम भोला और काम देखो तो धूर्त के! संझली बहू, अब तुम्हीं बताओ कि इसने किसके लिए चोरी की? मेरे लिए या तेरे लिए?"

मारे क्रोध के हेमांगिनी आपा-धापा भूल बैठी। रोग से उसका शरीर पहले ही शिथिल था, झूठे आरोप से उसका मन भी दुखी हो गया। उसने आगे बढ़कर किशन के दोनों गालों पर

जोर से दो तमाचे जड़ दिए और कहा, "शैतान! मैंने तुझे चोरी करने की सीख दी है? कितनी बार तुझे मना किया कि यहां मत आया कर। कितनी बार तुझे दरवाजे से भगाया। मुझे लगता है कि तू हमारे यहां भी चोरी करने के विचार से ही जब-तब इधर-उधर झांका करता था।"

अब घर के सब लोग वहां जमा हो गए थे। शिब्बू ने कहा, "मां, मैंने परसों रात इसे अपनी आंखों देखा है, यह तुम्हारे कमरे के सामने अंधेरे में छिपा खड़ा था। मुझे देखते ही भाग गया था। यदि मैं इसे देख न लेता तो यह अवश्य तुम्हारे कमरे में घुसकर चोरी करता।"

पांचू गोपाल ने कहा, "यह जानता है कि चाची की तबीयत ठीक नहीं है। इसलिए वे जल्दी सो जाती हैं। यह क्या कम चालाक है!"

किसान के साथ मंझली बहू के आज के व्यवहार से कादम्बिनी जितनी प्रसन्न हुई, उतनी आज तक कभी नहीं हुई थी। उसने प्रसन्न होकर

कहा, "भीगी बिल्ली की तरह खड़ा है। मँझली बहू, भला मैं कैसे जानती कि तुमने इसे अपने घर आने को मना किया है। यह तो सबसे कहता फिरता है कि 'मझली दीदी मुझे माँ से भी बढ़कर चाहती हैं।' इसके बाद उसने प्रसाद के दोने को दूर फेंककर कहा, "तीन लपाए चुराकर न जाने कहाँ से यह प्रसाद के कुल-पात उठा लाया।"

घर ले-जाकर कादम्बिनी के पति ने चोर को सजा देनी प्रारम्भ की। उसे निर्दयतापूर्वक पीटा जाने लगा। किन्तु किशन ने न तो मुँह से कुछ कहा और न रोया। जब इस गाल पर थप्पड़ पड़ता तो मुँह उधर घुम जाता और जब उस गाल पर थप्पड़ लगता तो इधर। अभागा किशन बिना किसी प्रकार का विरोध किए चुपचाप मार खाता रहा। उसे इस तरह चुपचाप मार खाते देखकर कादम्बिनी ने व्यंग्य कसा, "लगता है लड़कपन से इसे मार खाने का अच्छा अभ्यास है। किन्तु भगवान् साक्षी है कि यहाँ आने से पहले कभी किसी ने इस पर हाथ नहीं उठाया था।"

हेमांगिनी अपने कमरे की खिड़कियाँ बन्द करके पत्थर की मूरत की तरह चुपचाप बैठी है। उमा किशन को मार पड़ते देख आई है। उसने वापस आकर बताया, 'ताई जी कहती हैं कि किशन मामा बड़ा होकर डाकू बनेगा। उसके गाँव में न जाने कौन-सी देवी है.....'

"उमा!"

अपनी माता का आँसुओं से भीगा मुँह देख और रुँधा हुआ कण्ठ स्वर सुनकर उमा चौंक पड़ी। उसने बिछौने के पास आकर पूछा, "क्या है माँ?"

"क्यों री! क्या अब भी उसे सब लोग मिलकर मार रहे हैं?" इतना कहकर हेमांगिनी मुँह के बल धरती पर लेटकर रोने लगी। उमा माँ के पास बैठकर उसकी आखें पोंछती हुई बोली, "प्रसन्न की माँ किशन मामा को बाहर खींचकर ले गई है।"

हेमांगिनी चुपचाप वैसे ही पड़ी रही। तीसरे पहर उसे जोर की सर्दी लगकर बुखार चढ़ने

लगा। आज कई दिनों के बाद सवेरे वह कुछ ठीक अनुभव कर रही थी और दो कौर अन्न खाने बैठी थी वह भोजन अब भी ज्यों-का-त्यों थाली में पड़ा हुआ था।

शाम को घर लौटने पर विपिन उस घर में अपनी भाभी से सारा हाल सुनकर क्रोध में भरे हुए अपने कमरे में जा रहे थे कि उमा ने पास आकर धीरे से कहा, "माँ बुखार में अचेत पड़ी हुई हैं।"

विपिन ने चौंककर पूछा, "अब फिर बुखार कैसे हो गया? तीन-चार दिन से तो तबीयत ठीक चली आ रही थी। आज फिर क्या हो गया?"

विपिन के मन में हेमांगिनी के प्रति आदर का भाव है। पति-पत्नी में बड़ा प्रेम है। पत्नी के कहने से ही वे भाई-भाभी से जुदा हुए थे।

वे घबराए हुए हेमांगिनी के कमरे में पहुँचे। देखा तो अभी भी हेमांगिनी धरती पर औंधे मुँह पड़ी है। उन्होंने उसे पलंग पर लिटाने के लिए

ज्योंही हाथ लगाया कि उसने आँखें खोल दीं। थोड़ी देर तक पति के मुख की ओर देखकर उसने उनके दोनों पैर पकड़ लिए और रोते हुए कहा, "किशन को अपने घर में आश्रय दे दो, नहीं तो मेरा यह बुखार नहीं छूटेगा। दुर्गा माई मुझे किसी तरह भी क्षमा नहीं करेंगी।"

विपिन अपने पैर छुड़ाकर उसके पास बैठ गए और सिर पर हाथ फेरते हुए उसे धीरज बँधाने लगे।

हेमांगिनी ने फिर पूछा, "दोगे आश्रय?"

विपिन ने हाथ से उसके आँसुओं को पोंछते हुए कहा, "तुम स्वस्थ हो जाओ। फिर तुम जैसा कहोगी, वैसा ही करूँगा।"

हेमांगिनी बिना कुछ कहे उठकर बिछौने पर जा लेटी। रात को उसका बुखार उतर गया।

दूसरे दिन सवेरे उठकर जब विपिन ने देखा कि बुखार नहीं है तो बड़े प्रसन्न हुए। वे नहा-धोकर और जलपान करके दुकान जा रहे थे कि जाने से हेमांगिनी ने उनके पास आकर कहा,

"ज्यादा मार पड़ने से किशन को जोर का बुखार हो गया है। उसे मैं अभी यहाँ ले आती हूँ। उस घर में तो माँगने पर भी उसे कोई पानी का घूँट नहीं देगा!"

विपिन ने बड़ी उदासीनता से उत्तर दिया, "उसे यहाँ लाने की क्या आवश्यकता है? जहाँ है, वहीं रहने दो न!"

हतभागिनी ने कुछ क्षण जड़वत् खड़ी रहने के बाद कहा, "कल रात को तो तुमने वचन दिया था कि उसे आश्रय दोगे?"

विपिन ने रुखाई के साथ अस्वीकार-सूचक सिर हिलाकर कहा, "वह हमारा क्या लगता है जो उसे घर लाकर पालना-पोसना होगा? तुम भी बड़ी विचित्र हो।"

कल रात को अपनी स्त्री को अत्यन्त अस्वस्थ देखकर जो बात मान ली थी, आज स्वस्थ देखकर उन्होंने उसे मानने से इनकार कर दिया। वे छाता बगल में दबाकर चल पड़े और बोले,

"देखो, पागलपन मत करो, भैया और भाभी दोनों बहुत ज्यादा चिढ़ जाएँगे।"

हेमांगिनी ने शान्त किन्तु दृढ़ स्वर में कहा, "वे लोग चिढ़ जाएँगे तो क्या इसी भय से उन्हें उस लड़के को मार डालने दिया जाए? मैंने कह दिया कि मैं उसे इस तरह मरने नहीं दूँगी। मैं उसे लाऊँगी तो क्या मुझे कोई रोक सकेगा? मेरी उमा और लतिका दो बच्चे हैं। वह आ जाएगा तो तीन हो जाएँगे।"

"अच्छा, अभी मुझे दुकान पहुँचना है। फिर देखा जाएगा।" कहकर बिपिन फिर चलने लगे तो हेमांगिनी रास्ता रोककर सामने जा खड़ी हुई और बोली, "तो क्या उसे इस घर में नहीं लाने दोगे?"

"हटो भी! कैसा पागलपन करती हो।" कहकर क्रोध से उसे घूरते हुए बिपिन चल दिए।

हेमांगिनी ने शिम्बू को पुकारकर कहा, "शिम्बू! जाकर एक बैलगाड़ी ले आ। मैं अपने मायके जाऊँगी।"

विपिन सुनकर मन में हँसे और बोले, "तो धमकी दी जा रही है!" और वे उपेक्षा दिखाते हुए दुकान चले गए।

किशन चण्डी-मण्डप के पास फटी चटाई पर एक ओर ज्वर और मार की पीड़ा के कारण अचेत-सा पड़ा था। हेमांगिनी ने पुकारा, "किशन!"

किशन एक ही बार की पुकार में ऐसे उठ खड़ा हुआ जैसे पहले से ही तैयार हो। उसने पूछा, "क्या है मँझली दीदी?" और रोग तथा सन्ताप की सारी पीड़ा भूलकर वह हँसी से खिल पड़ा। वह ऐसे उठ खड़ा हुआ जैसे उसे कोई रोग ही न हो। वह चटाई को झाड़ते हुए बोला, "बैठो।"

हेमांगिनी ने उसे प्यार करते हुए कहा, "नहीं भैया, इस समय मैं बैठूँगी नहीं। तू मेरे साथ चल। मुझे मेरे मायके पहुँचा आ।"

"चलो।" कहकर किशन ने अपना फटा हुआ अँगोछा कन्धे पर रखा और तैयार हो गया।

हेमांगिनी के घर के सामने बैलगाड़ी खड़ी

थी। किशन को साथ लेकर हेमांगिनी गाड़ी पर जा बैठी। गाड़ी जब गाँव की सीमा से बाहर निकल गई तो पीछे से किसी को पुकारते सुनकर गाड़ीवान ने गाड़ी रोक ली।

पसीने से तर और भागने के कारण हाँफते हुए बिपिन वहाँ आ पहुँचे। डरते-डरते पूछने लगे, "कहाँ जा रही हो?"

हेमांगिनी ने किशन को दिखाते हुए कहा, "इसके गाँव जाती हूँ।"

"कब तक लौटोगी?" बिपिन ने पूछा।

हेमांगिनी ने गम्भीर दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, "जब भगवान् लौटाएँगे, तब लौट आऊँगी।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा?"

हेमांगिनी ने किशन की ओर संकेत करते हुए कहा, "इसे जब कोई आश्रय मिल जाएगा, तभी लौट पाऊँगी।"

बिपिन को स्मरण हो आया कि उस दिन भी उन्होंने अपनी स्त्री के मुख का वैसा ही भाव देखा था और ऐसा ही कण्ठ-स्वर सुना था जिस

दिन मोती कुम्हार के आश्रयहीन भानजे का प्राण बचाने के लिए वह अकेली ही सब लोगों के विरुद्ध डट गई थी। उन्हें यह भी लगा कि अब यह वह हेमांगिनी नहीं है जिसे आँखें तरेरकर किसी काम से रोका जा सके।

विपिन ने अपराधी के-से स्वर में कहा, "अच्छा, अब क्षमा कर दो और घर लौट चलो।"

हेमांगिनी ने हाथ जोड़कर कहा, "नहीं, तुम्हीं मुझे क्षमा कर दो। मैं जिस काम के लिए निकली हूँ, उसे पूरा किए बिना घर नहीं लौटूँगी।"

विपिन क्षणभर अपनी पत्नी के शान्त किन्तु गम्भीर मुख की ओर चुपचाप निहारते रहे। फिर सहसा उन्होंने किशन का दाहिना हाथ पकड़कर कहा, "किशन, अपनी मँझली दीदी को घर लौटा ले चलो। मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि जबतक जीता रहूँगा, तबतक तुम दोनों भाई-बहन को कोई अलग न कर सकेगा।"

□□